APPROVED UGC CARE

ISSN - 2348 - 2397

SHODH SARITA

JOURNAL OF ARTS, HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY QUARTERLY BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

Ref. No. : SS/2020/SID28

Date : 22-09-2020

Certificate of Publication

डॉ. विजयलक्ष्मी शास्त्री
सहायक प्राध्यापक हिन्दी
राजीव गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
अम्बिकापुर, जिला सरगुजा, छ.ग.

TITLE OF RESEARCH PAPER

निराला की राष्ट्रीय चेतना : नवयुगीन सन्दर्भ में

This is certified that your research paper has been published in **Shodh Sarita, Volume 7, Issue 27, July to September 2020**

SHODH SARITA
Editor in Chief

CHIEF EDITORIAL OFFICE

• 448 /119/76, KALYANPURI THAKURGANJ, CHOWK, LUCKNOW -226003 U.P.

Cell.: 09415578129, 07905190645

E-mail : serfoundation123@gmail.com

Website : http://www.seresearchfoundation.in | http://www.seresearchfoundation.in/shodhsarita

ISSN - 2348-2397
APPROVED UGC CARE
SID
SHODH SARITA
SHODH SARITA
Vol. 7, Issue 27, July-September, 2020
Page Nos. 104-107
AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

निराला की राष्ट्रीय चेतना : नवयुगीन सन्दर्भ में

डॉ0 विजयलक्ष्मी शास्त्री*

शोध सारांश

निराला छायावाद के आधार स्तंभ कवि तो हैं ही साथ ही वे हिंदी साहित्य के अग्रगण्य कवियों में से एक हैं। निराला ऐसे समय में हिंदी साहित्य लेखन के क्षेत्र में प्रवृत्त हुए जब देश पराधीन था तथा स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु संघर्षरत था। कोई भी रचनाकार देश की यथार्थ स्थिति से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। देश की न केवल राजनीतिक बल्कि सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक स्थिति पर चिंतन करना भी रचनाकार का कर्तव्य होता है और यही राष्ट्र भक्ति है। कवि निराला की राष्ट्रीय चेतना केवल राजनीति से प्रेरित नहीं है। निराला का ध्यान राष्ट्रीयता के विभिन्न पक्षों जैसे सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि पर गया है। उनकी कविता में शासक कृत अव्यवस्था प्राचीन संस्कृति के आधार पर आधुनिक संस्कृति की विवेचना करते हुए समष्टिगत परिवर्तन की आकांक्षा व समाज की दुर्दशा का चित्रण आदि मिलता है। वे समाज में व्याप्त अनेक विकृतियाँ दूर कर देना चाहते थे। यही वास्तवितक राष्ट्रीय चेतना है।

Keywords : निराला, राष्ट्रीयता, चेतना, समाज, साहित्य।

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' हिन्दी साहित्य के अग्रगण्य कवियों में से एक माने जाते हैं। निराला ऐसे समय में हिन्दी साहित्य रचना में प्रवृत्त हुए जब देश स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु संघर्षरत था। वह दौर आंदोलनों और बलिदानों का था। कवि प्रकृति का यथार्थ अध्येता होता है। परन्तु वह देश की दशा से भी अनभिज्ञ नहीं रहता है। वह देश की यथार्थ स्थिति से प्रभावित होता है। वह प्रभाव दुखद भी हो सकता है और सुखद भी। देश पराधीन था। देश की यथार्थ स्थिति का अनुभव और उसकी अभिव्यक्ति कवि अपना कर्तव्य समझता है। हमारे आलोच्य कवि की राष्ट्र के प्रति जो अनुभूति और अभिव्यक्ति थी, उस पर चर्चा करने से पूर्व राष्ट्रीयता पर विचार कर लेना आवश्यक प्रतीत होता है।

क्या राष्ट्रभक्ति केवल नारे लगा लेने से होता है या राष्ट्रभक्ति के गीत गा लेने से? नहीं, सिर्फ नारे लगा लेना या गीत गा लेना देश प्रेम नहीं होता है। बल्कि यह जानना आवश्यक है कि अपने राष्ट्र की स्थिति क्या है? यहाँ की सामाजिक, सांस्कृति व आर्थिक स्थिति कैसी है? इस पर ध्यान देना ही वास्तविक राष्ट्रभक्ति है। इसी से देश विकास के पथ पर अग्रसर होगा। राष्ट्रभक्ति के नारे लगा लेना तो बहुत आसान है। परन्तु देश की यथार्थ स्थिति पर चिंतन करना और समस्याओं के निराकरण के उपाय करना ही वास्तविक राष्ट्रीय चेतना है।

प्रो. जिर्मन के शब्दों में– "राष्ट्रीयता धर्म की भांति आध्यात्मिक है, राज्यत्व भौतिक है, राष्ट्रीयता मनोवैज्ञानिक है, राज्यत्व राजनीतिक है, राष्ट्रीयता मन की स्थिति है, राज्यत्व कानून की स्थिति है।"[1]

कवि निराला की राष्ट्रीय चेतना केवल राजनीति से प्रेरित होकर नहीं रह सकता और न ही देशप्रेम के नारे लगाने तक सीमित है, बल्कि समाज, संस्कृति और धर्म के विषय पर भी विचार करता है। राष्ट्रीयता के विभिन्न पक्षों पर कवि का ध्यान गया है। राजनीतिक पक्ष में शासक कृत अव्यवस्था का वर्णन कर परतंत्र राष्ट्र की वेदना को स्वर प्रदान किया तथा भविष्य की सुखद कल्पना की। सांस्कृतिक पक्ष में प्राचीन संस्कृति के आधार पर आधुनिक संस्कृति की विवेचना करते हुए समष्टिगत परिवर्त की इच्छा प्रकट की। सामाजिक पक्ष में समाज की दुर्दशा पर तीक्ष्ण व्यंग्य है। एक ऐसे भविष्य की कल्पना है, जिसमें सभी भारतवासी तत्कालीन परस्थिति के प्रति जागरूक हों तथा उनमें सुधार के आकांक्षी हों। निराला जी की राष्ट्रीयता सभी व्यक्तियों तथा सभी युगों के विकास से संबंधित हैं। भिखारी की दयनीय दशा का चित्रण दृष्टव्य है–

वह आता–
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।
पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक,
चल रहा लकुटिया टेक,

*सहायक प्राध्यापक – हिन्दी, राजीव गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अम्बिकापुर, जिला सरगुजा, छ.ग.

मुट्ठी भर दाने को भूख मिटाने को
मुंह फटी पुरानी झोली के फैलाता[3]

राजनीतिक पक्ष के विभिन्न रूप हैं, प्रत्येक का व्यापक प्रयोग कवि ने किया है। उनकी काव्य रचना का युग वह था जब देश पराधीन था। काले–काले बादलों से घिरे देश को बचाने के लिये राष्ट्रभक्त सेनानी की आवश्यकता है। वे महान नेता आह्वान करते हैं–

एक व्यक्ति से एक परिवार, परिवार से मुहल्ला, मोहल्ले से ग्राम और शहर तथा राष्ट्र का निर्माण होता है। राष्ट्र से तात्पर्य निर्जीव, निष्प्राण जमीन, पहाड़ों तथा घरों से नहीं अपितु राष्ट्र के निवासियों से है। देशप्रेम की भावना का अर्थ देशवासियों के प्रति प्रेम से लिया गया है। राष्ट्रीय चेतना देशवासियों के प्रति अपनी कर्तव्य परायणता के अर्थ में ग्रहण की जाती है। अधिकतर आलोचकों ने इस अर्थ को प्रमुखता नहीं दी और राष्ट्रीयता के नारे तथा देशभक्ति की रट लगाई। ऐसे लेखकों को देश के प्रति जागरूक नहीं कहा जा सकता। निराला जी का साहित्य विभीषिका के नग्न सत्य पर आधारित है। ''निराला ने देश की सामाजिक विभीषिका और आर्थिक शोषण की मनोवृत्ति का कठोर व्यंग्यात्मक शैली में तिलमिला देने वाला हृदयविदारक चित्र खींचा है। पद्य की अपेक्षा गद्य में उनका व्यंग्य अधिक खिल उठा है। 'कुल्लिभाट' में बंगाल की मध्यवर्गीय संस्कृति तथा साहित्य और संगीत की रहस्यात्मक कुलीनता के संदर्भ में उन अद्भुत बच्चों को रखकर पूरे युग पर व्यंग्य कराया है, जो मारे डर के फूलों को निराला के हाथ में इसलिए नहीं दे रहे थे कि छू जाने पर निराला को नहाना पड़ेगा। इससे अधिक हीन भावना और क्या हो सकती है? 'बिल्लेसुर बकरिहा' ग्रामीण जीवन की स्वार्थपरता, ईर्ष्या और पैसे की पूजा का सुन्दर चित्र है और साथ ही भारतीय किसान की अपराजेय शक्ति एवं दृढ़ता की व्यंग्य भरी कहानी 'चतुरी चमार' में शूद्रत्व के प्रति उठती हुई विद्रोह की वह चिंगारी है जो अंत में जमींदारी की कुलीनता को भस्मीभूत करके रहती है।''[4] उन्होंने अपने समाज में इतनी विद्रुपतायें, इतना दुःख, दर्द, निराशा देखा कि उनकी शैली भी अति कटु तथा तीव्र हो गयी थी। न केवल काव्य में बल्कि गद्य में भी।

वर्तमान का पतन हमारे कवि को भारत के भव्य गौरवशाली तथा गरिमापूर्ण अतीत में ले जाता है। तत्कालीन भारत की दीनहीन दशा को देखकर वह अतीत की ओर पलायन करता है तथा भविष्य की सुखद कल्पनाओं में वर्तमान को विस्तृत कर देना चाहता है। अतीत उनमें नयी स्फूर्ति का संचार करता है, वर्तमान के सुधार का मार्ग प्रशस्त करता है, मानवीय दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह दृष्टिकोण समता, स्वतंत्रता तथा बंधुत्व का है, जो गुलामी की बेड़ियों को तोड़ने का सन्देश देता है। निराला जी का पूरा जीवन असंतोष और उलझनों से भरा हुआ था। उन्हें यदि कुछ सांत्वना हुई तो स्मृतियों से, चाहे वह देश के अतीत की थी या उनके अपने अतीत की। तथैव उन्होंने 'सरोज' में अपनी पत्नी और 'खंडहरों' में भारत के गौरव का प्रतिबिम्ब देखा–

खंडहर खड़े हो तुम आज भी?
अद्भुत अज्ञात उस पुरातन के मलिन साज!
विस्मृति के नींद से जगाते हो क्यों हमें–
करुणाकर करुणामय गीत सदा गाते हुए!

.....

किंवा, हे यशोराशि!
कहते हो आंसू भाते हुए–
आर्ट भारत! जनक हूँ मैं
जैमिनी, पतंजलि, व्यास ऋषियों का,
मेरी ही गोद में शैशव विनोद कर
तेरा है बढ़ाया मान
राम–कृष्ण--भीमार्जुन–भीष्म–नरदेवों ने।[4]

कवि इतिहास के अनेक कालों पर दृष्टिगत करता है और प्रत्येक युग के वैशिष्ट्य का वर्णन करता है। ऐसा लगता है मानो कवि ने इतिहास के एक–एक अक्षर का अध्ययन ही नहीं मनन भी किया है। देश की अर्थव्यवस्था से तथा अर्थ के अन्यायपूर्ण वितरण के कारण कवि अपने जीवन में असंतुष्ट रहा। उसके दुखी क्लेशमय जीवन की मुख्यतः यही विडंबना थी। 'सरोज स्मृति' की ये पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं–

धन्ये! मैं पिता निरर्थक था
तेरे हित कुछ भी कर न सका।[5]

वास्तव में कवि के निरर्थक (कर्महीन) होने की नहीं अपितु अर्थहीन होने की सूचना देती है। अधिकतर जनता इसी असंतुलित अर्थव्यवस्था के पंजों में जकड़ी हुई तड़पड़ा रही है।

'तोड़ती पत्थर', 'भिक्षुक' इत्यादि वर्ग व्यवस्था की विषमता को स्पष्ट करती है। कवि समझ नहीं पाता है कि रक्त सभी का लाल है फिर भी अमीर–गरीब का भेदभाव क्यों? मजदूर और कृषक वर्ग की यही दशा रही तो देश का विकास कैसे संभव है? एक आदमी गर्मी की झुलसती धूप में पत्थर तोड़े तथा दूसरा वातानुकूलित कमरों में आराम करे, ऐसा क्यो?

वह तोड़ती पत्थर
देखा मैंने उसे इलाहाबाद के पथ पर–
वह तोड़ती पत्थर।
कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके टेल बैठी हुई स्वीकार;
श्याम तन, भर बंधा यौवन,
नत–नयन, प्रिय–कर्म–रत मन,
गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार–बार प्रहार;
सामने तरु–मालिका अत्तिलका, प्राकार।[6]

आज देश भ्रष्टाचार की समस्या से जूझ रहा है। देश की

प्रगति में यह सबसे बड़ा बाधक तत्व है। निराला जी भी इस समस्या से जूझ रहे थे, जो कि उनकी निम्न पंक्तियों से उद्‌भाषित होता है–

जाना तो अर्थोगमोपाय,
पर रहा सदा संकुचित–काय
लखकर अनर्थ आर्थिक पथ पर
हारता रहा मैं स्वार्थ समर।7

निराला अर्थोपार्जन के उपाय तो जानते थे, किन्तु उस मार्ग पर चलने के विरोधी थे। जब हम राष्ट्र के विकास की बात करते हैं, तब देश की आधी आबादी की दीन–हीन दशा का दृश्य सामने आ जाता है। आधी आबादी अर्थात् स्त्रियों की स्थिति में सुधार एवं उनके विकास के अभाव में राष्ट्र का कभी भी विकास संभव नहीं है। देश की स्त्रियों की दशा को निराला ने देखा और समझा। कवि की नारी भावना से भलीभांति परिचित होने के लिये 'विधवा' दृष्टव्य है–

वह इष्टदेव के मंदिर की पूजा–सी
वह दीपशिखा–सी शांत, भाव में लीन
वह क्रूर काल तांडव की स्मृति रेखा–सी
वह टूटे तारु की छूती लता–सी दीन–
दलित भारत की विधव है।[8]

'अनामिका' में 'मुक्ति' कविता, नारी मुक्ति को ही विषय बनाकर लिखी गयी है। नारी मुक्ति को विषय बनाकर उन्होंने अनेक लेख और टिप्पणियाँ लिखीं तथा इसके लिये हर संभव प्रयास किया कि समाज में नारी अपनी नारी व्यक्तित्व की रक्षा करते हुए, पुरुषों के समकक्ष स्थान प्राप्त करें, उन्हें समान स्वतंत्रता प्राप्त हो और उन्हीं की तरह राष्ट्रीय आन्दोलन से लेकर राष्ट्र निर्माण तक में हिस्सा लें। उस समय में जब भारतीय समाज में संस्कृति में स्त्री के रूप में जन्म लेना ही पाप समझा जाता हो, स्त्री को कोई सामाजिक और राजनीतिक अधिकार प्राप्त न हो, वह संपत्ति की हकदार न मानी गयी हो, जिस समय माता–पिता द्वारा नवजात पुत्रियों की हत्या तक कर देने की परम्परा चली आ रही हो, उसमें पुत्री पर कविता लिखना ही एक क्रांतिकारी कार्य है। वात्सल्य रस की कविता तो अनेक कवियों ने लिखा पर वह पुत्र प्रेम से प्रेरित कविताएं थीं। निराला प्रथम कवि हैं, जिन्होंने पुत्री प्रेम की कविता लिखी।

हमारा देश कृषि प्रधान देश है। परन्तु कृषक वर्ग हमेशा ही समस्याओं से जूझता रहा है। तत्कालीन समाज में कृषकों की दशा दयनीय थी। कृषक भूखों मर रहा था। महाजन बेईमानी का धन जोड़ रहे थे। निर्धन और निर्धन होता जा रहा था और आज भी कमोबेश यही स्थिति है। केवल तरीके बदल गये हैं। कृषक विवशता में आज भी आत्महत्या कर रहे हैं। निराला जी की ये पंक्तियाँ कितनी प्रासंगिक प्रतीत होती हैं–

इस प्रकार जब बघार चलती थी,
चूँकि हम किसान सभा के
भेजी के मददगार
जमींदार ने गोली चलाई
पुलिस के हुक्म की तामिली की।
ऐसा यह पेंच।9

क्या कृषक वर्ग की समस्या राष्ट्रीय समस्या नहीं है? जिस राष्ट्र में अन्नदाता ही दयनीय दशा में हो, वह राष्ट्र कभी उन्नति नहीं कर सकता।

निराला जी ने भाषागत एकता पर भी बल दिया। उनकी आकांक्षा थी कि देश में हिन्दी का आदर हो तथा उसके प्रति लोगों में अगाध निष्ठा हो। वे हिन्दी की गति से असंतुष्ट थे। कवि की इच्छा थी कि भाषा की गति को जीवन की गति के समान वेग प्राप्त हो। इसके लिये सभी प्रान्तों को अधिकार देना होगा कि वे उसकी समृद्धि में जो चाहे करें। अतः उन्होंने चयन में संकलित एक लेख में लिखा था– "जो हिन्दी राष्ट्र भाषा होगी, जो हिन्दी किसी प्रान्त की मातृभाषा नहीं, जिसे देश के लेखक अभी गढ़ रहे हैं, जिस हिन्दी के सहारे भारत की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, वैज्ञानिक, ऐतिहासिक और साहित्यिक सभी शंकाओं का समाधान किया जाना निश्चित है, उसे उन्नत करने के लिये भिन्न–भिन्न शब्द गढ़ने तथा अपनाने के लिये, उन्हें व्याकरण सम्मत स्थान देने के लिये, भाषा को वर्धित करने के लिए, सभी प्रान्तवासियों को समान अधिकार है।"10

निराला जी का मानना था कि उन्नत भाषा ही राष्ट्र भाषा का स्थान ग्रहण कर सकती है। जिस देश की भाषा एक ही होगी, उसकी एकता सत्य है। कवि की यही आकांक्षा है। उन्हें दुःख है कि हिन्दी कुछ ऐसे लोगों के हाथों में आ गयी है, जिनमें उसका विकास पथ खोजने का सामर्थ्य नहीं और वे उसे उन अक्षम हाथों से स्वाधीन करने में ही अपना जीवन व्यतीत कर गये। निराला जी ने अपना कर्तवय पूर्ण किया। भाषा के प्रति अपने उत्तरदायित्व को निभाया एवं आगामी साहित्यकारों का पथ प्रशस्त किया। किन्तु दुःख का विषय है कि आज भाषा की समस्या जटिलतर रूप ग्रहण कर रही है। जो कि देश की समृद्धि में बाधक है।

निराला जी राष्ट्र के विकास के प्रति सचेत थे। वे बहुमुखी विकास चाहते थे। वे भारतमाता के आराधक थे। वह राष्ट्र वंदना के गीत गाते हैं। जन जागृति के लिये उद्‌बोधन गान लिखते हैं तथा वरदान के रूप में यदि भगवान से कुछ मांगते हैं तो वह देश की सुख समृद्धि से ही संबंध रखता है। उनकी वंदना गीतों में भारती वंदना प्रमुख है–

भारती जय विजय करें।
कनक–शस्य कमल धरे।11

इस प्रकार, निराला जी की राष्ट्रीय चेतना का वह एक विशिष्ट स्वरूप है। सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना उनमें अत्यंत प्रबल थी। समाज की दुर्दशा का चित्रण करके वे समाज सुधारकों

को सचेत करना चाहते थे। वे समाज में व्याप्त अनेक विकार दूर कर देना चाहते थे। यही वास्तविकता राष्ट्रीय चेतना है।

सन्दर्भ :–

1. शर्मा, पद्मसिंह, निराला, पृष्ठ–47
2. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', भिक्षुक, कविताकोश, kavitakosh.org
3. शर्मा, पद्मसिंह, निराला, पृष्ठ–49
4. निराला, हिंदी कविता, hindikavita.com
5. शर्मा, रामविलास, रागविराग, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं–1995, पृष्ठ–80
6. शर्मा, रामविलास, रागविराग, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं–1995, पृष्ठ–118
7. शर्मा, रामविलास, रागविराग, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं–1995, पृष्ठ–80
8. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', विधवा कविताकोश, kavitakosh.org
9. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', झींगुर डटकर बोला, कविताकोश, kavitakosh.org
10. चयन, प्रथम संस्करण, पृष्ठ– 18
11. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', भिक्षुक, कविताकोश, kavitakosh.org

❐❐❐